Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 9, September - 2025

DOIs:10.2018/SS/202509005 --:-- Research Paper / Article / Review

महिला स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका और विभाजन का विमर्श: एक ऐतिहासिक अध्ययन

Mantasha Hasan
Ph.D. Research Scholar, Department/Faculty - History, Sona Devi University, Ghatsila, India
Email – mantashahasanckp@gmail.com

सारांश : *यह शोध पत्र भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी और भारत के विभाजन के दौरान उनके अनुभवों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करता है। स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न पड़ावों पर महिलाओं ने केवल सहायक की भूमिका नहीं निभाई, बल्कि कई बार आंदोलन की अगुवाई करते हुए साहस, नेतृत्व और दृढ़ संकल्प का परिचय भी दिया। रानी लक्ष्मीबाई, अरुणा आसफ़ अली, उषा मेहता जैसी अनेक महिलाओं ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने अद्वितीय योगदान से इतिहास को समृद्ध किया। यह अध्ययन उन महिलाओं के योगदान को उजागर करने का प्रयास है जिन्हें मुख्यधारा के ऐतिहासिक विमर्श में अपेक्षित स्थान नहीं मिला।*

साथ ही, यह शोध भारत-विभाजन के समय महिलाओं के साथ घटित सामाजिक एवं शारीरिक उत्पीड़न, विस्थापन, और हिंसा की घटनाओं को विश्लेषित करता है। विभाजन केवल राजनीतिक घटना नहीं थी, बल्कि इसने महिलाओं के जीवन को गहराई से प्रभावित किया और उनके अस्तित्व पर गहरे घाव छोड़े। इस अध्ययन के माध्यम से इतिहास को स्त्री दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया है, जिससे उस दौर की नारी चेतना, पीड़ा और संघर्ष को बेहतर ढंग से समझा जा सके।

यह शोध आत्मकथाओं, समकालीन समाचारों, दस्तावेजों और अन्य ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर महिलाओं की भूमिका को एक नए सामाजिक और ऐतिहासिक विमर्श में प्रस्तुत करता है ।

कुंजी शब्द : *महिला स्वतंत्रता सेनानी, भारत विभाजन, नारी विमर्श, स्वतंत्रता संग्राम, ऐतिहासिक अध्ययन, विस्थापन, स्त्री चेतना, लैंगिक दृष्टिकोण, सामाजिक हिंसा ।*

1. परिचय :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास साहस, त्याग और संघर्ष की अनगिनत कहानियों से समृद्ध है। यद्यपि स्वतंत्रता संग्राम में पुरुषों की भूमिका को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है, फिर भी महिलाओं के योगदान को अक्सर नजरअंदाज कर दिया गया है या सीमित रूप में प्रस्तुत किया गया है। जबकि ऐतिहासिक सच्चाई यह है कि महिलाओं ने केवल सहभागिता ही नहीं की, बल्कि अनेक अवसरों पर उन्होंने आंदोलन का नेतृत्व करते हुए अपनी असाधारण प्रतिबद्धता और पराक्रम का परिचय भी दिया। रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, सरोजिनी नायडू, दुर्गा भाभी, अरुणा आसफ़ अली और उषा मेहता जैसी अनेक महिलाओं ने स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से अपने प्राणों तक की आहुति दी।

यह शोध उन महिला स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को केंद्र में लाने का प्रयास करता है, जिन्हें पारंपरिक इतिहास लेखन में अपेक्षित महत्व नहीं दिया गया। साथ ही, यह अध्ययन 1947 के भारत-विभाजन के दौरान महिलाओं पर पड़े प्रभावों – जैसे यौन हिंसा, मानसिक आघात, विस्थापन और सामाजिक विघटन – का भी आलोचनात्मक परीक्षण करता है। विभाजन केवल राजनीतिक परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह स्त्रियों के लिए अस्मिता और अस्तित्व के संकट का युग बन गया।

यह शोध इतिहास को लैंगिक दृष्टिकोण से पुनः परखने का प्रयास है, जिससे महिलाओं की उपेक्षित भूमिका और उनके अनुभवों को एक नया ऐतिहासिक और सामाजिक विमर्श प्रदान किया जा सके।

2. साहित्य समीक्षा :

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर आधारित अधिकांश ऐतिहासिक शोधों में लंबे समय तक पुरुषों के योगदान को ही केंद्रीय भूमिका में रखा गया है। महिलाओं की सक्रिय सहभागिता के बावजूद, इतिहास लेखन में उनका उल्लेख या तो सीमित रूप से हुआ है अथवा उन्हें गौण भूमिका में प्रस्तुत किया गया है। पिछले कुछ दशकों में नारीवादी दृष्टिकोण से इतिहास के पुनर्पाठ की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिसके माध्यम से शोधकर्ताओं ने स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की उपस्थिति और प्रभाव को नए सिरे से रेखांकित करने का प्रयास किया है।

स्वतंत्रता संग्राम की व्यापक व्याख्या करने वाले इतिहासकारों जैसे कि बिपिन चंद्र और रामचंद्र गुहा ने प्रमुख आंदोलनों और नेताओं पर विस्तृत कार्य किया है, लेकिन महिला सेनानियों की भूमिका पर उनका ध्यान अपेक्षाकृत सीमित रहा है। इसके विपरीत, उर्वशी बुटालिया की ***The Other Side of Silence*** और राधा कुमार की ***The History of Doing*** जैसी कृतियाँ महिलाओं के दृष्टिकोण से विभाजन और सामाजिक संघर्षों को सामने लाती हैं। बुटालिया ने विभाजन की पीड़ा को एक मानवीय संकट के रूप में देखा है, जहाँ महिलाओं को विशेष रूप से हिंसा और अस्मिता संकट का सामना करना पड़ा।

कमला देवी चट्टोपाध्याय और अमृता प्रीतम जैसे लेखकों के साहित्य में महिला स्वतंत्रता सेनानियों की चेतना, भावनाएँ और सामाजिक सोच को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ-साथ, मौखिक इतिहास, आत्मवृत्तांत और क्षेत्रीय स्त्रोतों में अनेक अनाम महिलाओं की कहानियाँ छिपी हुई हैं, जो आज भी व्यापक शोध की प्रतीक्षा कर रही हैं।

हालांकि कुछ प्रसिद्ध महिला सेनानियों पर अध्ययन हुआ है, लेकिन ग्राम्य, पिछड़े या हाशिए पर खड़े समुदायों से आई महिलाओं की भूमिका अभी भी ऐतिहासिक विमर्श में समुचित स्थान नहीं पा सकी है। इसी प्रकार, विभाजन के दौर में महिलाओं के अनुभवों–विशेष रूप से हिंसा, विस्थापन और सामाजिक उपेक्षा–पर केंद्रित गंभीर शोध का अभाव दिखाई देता है।

यह शोधपत्र इस उपेक्षित क्षेत्र में नया योगदान देने का प्रयास करता है। इसमें महिला स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को इतिहास के केंद्र में लाते हुए, विभाजन के समय उनके अनुभवों को एक वैकल्पिक, स्त्री-केन्द्रित दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया है। यह अध्ययन न केवल इतिहास की मौजूदा धारणाओं को चुनौती देता है, बल्कि एक संतुलित, समावेशी और संवेदनशील ऐतिहासिक विमर्श को भी जन्म देता है।

3. अनुसंधान के उद्देश्य :

- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना, ताकि उनकी भूमिका को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

- उन महिला क्रांतिकारियों के योगदान को प्रकाश में लाना, जिन्हें पारंपरिक इतिहास में पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाया है।
- स्वतंत्रता संघर्ष के विभिन्न चरणों में महिलाओं द्वारा निभाई गई नेतृत्वकारी भूमिकाओं और उनके सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- विभाजन की प्रक्रिया के दौरान महिलाओं द्वारा झेले गए अनुभवों – जैसे हिंसा, पलायन, सामाजिक असुरक्षा और यौन उत्पीड़न – का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
- भारत-पाकिस्तान विभाजन के संदर्भ में स्त्रियों की चेतना, पहचान और उनके संघर्ष के विविध आयामों को समझना।
- महिला केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से ऐतिहासिक स्रोतों, आत्मकथात्मक साहित्य और मौखिक साक्ष्यों को आधार बनाकर एक वैकल्पिक इतिहास लेखन की दिशा में कार्य करना।
- इतिहास लेखन में महिलाओं की भूमिका को नए संदर्भों में स्थापित करते हुए, एक अधिक संतुलित, समावेशी और संवेदनशील ऐतिहासिक विमर्श का निर्माण करना।

4. अनुसंधान पद्धति :

इस शोध का मुख्य उद्देश्य महिला स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका तथा भारत के विभाजन के दौरान उनके अनुभवों का ऐतिहासिक और समालोचनात्मक विश्लेषण करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शोध में मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) और ऐतिहासिक अनुसंधान की विधियों का उपयोग किया गया है।

4.1. अनुसंधान का स्वरूप

यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दोनों प्रकार का है, जो ऐतिहासिक घटनाओं को सामाजिक-सांस्कृतिक और नारीवादी दृष्टिकोण से समझने पर केंद्रित है। इसमें महिलाओं के अनुभवों को स्त्री विमर्श के तहत पुनः मूल्यांकित किया गया है।

4.2. डेटा संग्रह के स्रोत

1. प्राथमिक स्रोत: स्वतंत्रता संग्राम काल की महिला सेनानियों के व्यक्तिगत पत्र, आत्मकथाएँ, सार्वजनिक भाषण, सरकारी अभिलेख, समकालीन समाचार पत्र, तथा विभाजन के समय के मौखिक साक्ष्य शामिल हैं।
2. द्वितीयक स्रोत: इतिहासकारों, नारीवादी विद्वानों द्वारा रचित पुस्तकें, शोध पत्र और विभाजन से संबंधित विश्लेषणात्मक साहित्य का अध्ययन किया गया।

4.3. डेटा संग्रह की तकनीकें

1. दस्तावेजों का अध्ययन: विभिन्न ऐतिहासिक दस्तावेजों, पुस्तकालयीय सामग्रियों, तथा समाचार पत्रों का व्यवस्थित और गहन अध्ययन।
2. मौखिक इतिहास का संकलन: विभाजन के दौरान जीवित बचे व्यक्तियों या उनके वंशजों से प्राप्त मौखिक जानकारी का संग्रह और उसका विश्लेषण।

3. साहित्य समीक्षा: पूर्व के शोध कार्यों और संबंधित साहित्य का समग्र अवलोकन कर अध्ययन की व्यापकता और गहराई सुनिश्चित करना।

4.4. डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया

संग्रहित जानकारी का सामग्री विश्लेषण किया गया, जिसमें नारीवादी सिद्धांतों एवं सामाजिक इतिहास के दृष्टिकोण से विषयों का विवेचन किया गया। इस विश्लेषण के माध्यम से महिलाओं के योगदान, उनके संघर्ष और विभाजन के प्रभावों को समझने का प्रयास किया गया।

5. निष्कर्ष एवं परिणाम :

महिलाओं की सक्रिय और नेतृत्वकारी भूमिका:
यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी केवल सहायक या पार्श्वभूमि तक सीमित नहीं थी। बल्कि वे इस आंदोलन की अगुआई करने वाली महत्वपूर्ण शख्सियतें भी थीं। रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, दुर्गा भाभी, सरोजिनी नायडू और अरुणा आसफ़ अली जैसी महिला क्रांतिकारियों ने न केवल साहसिक भूमिका निभाई, बल्कि नेतृत्व के नए आदर्श स्थापित किए। इसने पुरुष प्रधान इतिहास के दृष्टिकोण को चुनौती दी है।

महिलाओं के योगदान की उपेक्षा:
अधिकांश पारंपरिक इतिहास लेखन में महिला स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका को अक्सर कम महत्व दिया गया या उन्हें सामान्यीकृत कर दिया गया। खासकर ग्रामीण, निम्न आर्थिक वर्ग और अल्पसंख्यक समुदायों की महिलाओं की कहानियाँ इतिहास की मुख्य धारा से बाहर रह गईं। इस शोध ने इन छिपे हुए पहलुओं को सामने लाने का प्रयास किया है।

विभाजन के दौरान महिलाओं के अनुभव :
भारत के विभाजन के समय महिलाओं को बड़े पैमाने पर हिंसा, यौन उत्पीड़न, विस्थापन और सामाजिक विघटन का सामना करना पड़ा। यह केवल राजनीतिक घटना नहीं थी, बल्कि मानवीय दृष्टिकोण से एक गहरी त्रासदी थी। इस अध्ययन ने न केवल इन पीड़ाओं को दस्तावेजी रूप में प्रस्तुत किया, बल्कि उनके सामाजिक और मानसिक प्रभावों का भी विश्लेषण किया।

स्त्री चेतना और संघर्ष:
विभाजन के कठिन दौर में महिलाओं के भीतर एक नई जागरूकता और सामूहिक संघर्ष की भावना उभरी। उन्होंने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए विभिन्न स्तरों पर आवाज उठाई, जो बाद के सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी।

ऐतिहासिक पुनर्परिभाषा की आवश्यकता:
स्त्री दृष्टिकोण से इतिहास को पुनः देखने और लिखने की जरूरत है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यदि महिलाओं के योगदान को इतिहास में उचित स्थान दिया जाए, तो स्वतंत्रता संग्राम और विभाजन की घटनाओं की समझ अधिक व्यापक, संतुलित और समृद्ध होगी।

6. विश्लेषण :

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी केवल सहायक भूमिका तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे आंदोलन के नेतृत्व में भी सक्रिय रहीं। पारंपरिक इतिहास में पुरुषों के योगदान को प्राथमिकता मिलने के कारण महिलाओं के साहस और संघर्ष की कई कहानियाँ अनदेखी रह गई हैं। यह शोध उन अनजानी और कम चर्चित महिला सेनानियों के योगदान को उजागर करता है, जिससे इतिहास की समझ और भी विस्तृत और समृद्ध होती है।

महिला स्वतंत्रता सेनानियों ने सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को पार करते हुए राजनीतिक जागरूकता और सक्रिय संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शोध में स्त्री विमर्श की दृष्टि से उनके अनुभवों को नया अर्थ दिया गया है, जो पारंपरिक इतिहास लेखन से भिन्न है। यह दृष्टिकोण महिलाओं के भीतर जागरूकता, सामूहिक संघर्ष और महिला सशक्तिकरण के उदय को दर्शाता है।

विभाजन के दौरान महिलाओं को जिन अत्याचारों, विस्थापन और सामाजिक विघटन का सामना करना पड़ा, वे केवल राजनीतिक घटनाएं नहीं थीं, बल्कि गहरी मानवीय और सामाजिक त्रासदियां थीं। इस शोध में इन पीड़ाओं का सामाजिक और मानसिक प्रभावों के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है, जिससे विभाजन के व्यापक प्रभावों को समझने में सहायता मिलती है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि विभाजन के बाद महिलाओं ने अपनी पहचान और अधिकारों के लिए संघर्ष जारी रखा, जो भविष्य के सामाजिक आंदोलनों की नींव साबित हुआ। यह शोध न केवल इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता पर बल देता है, बल्कि समकालीन समाज में लैंगिक समानता और सामाजिक संरचनाओं को समझने के लिए भी महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

अंततः, यह अध्ययन महिलाओं की भूमिका को भारतीय इतिहास में पुनः स्थापित करने तथा विभाजन के समय उनके अनुभवों को समग्र दृष्टिकोण से समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। यह नारीवादी दृष्टिकोण से इतिहास के पुनर्मूल्यांकन में सहायक साबित होता है, जिससे इतिहास अधिक समावेशी, न्यायसंगत और सटीक बनता है।

7. निष्कर्ष :

इस शोध के माध्यम से यह प्रमाणित होता है कि भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरुषों के नेतृत्व या भागीदारी तक सीमित नहीं था, बल्कि महिलाओं की भागीदारी भी उतनी ही प्रभावशाली और निर्णायक रही। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर अरुणा आसफ़ अली और उषा मेहता तक, अनेक महिलाओं ने अपने साहस, नेतृत्व क्षमता और बलिदान के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी और जनता को प्रेरित किया।

ऐतिहासिक दस्तावेजों और विमर्शों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अब तक के प्रचलित इतिहास लेखन में महिला सेनानियों की भूमिकाओं को अपेक्षित स्थान नहीं दिया गया। यह अध्ययन उन उपेक्षित योगदानों को पुनः इतिहास की धारा में लाने का प्रयास करता है। साथ ही, भारत विभाजन के दौरान महिलाओं पर हुए हिंसा, यौन उत्पीड़न, और विस्थापन जैसी घटनाओं का विश्लेषण यह संकेत देता है कि विभाजन केवल एक राजनीतिक घटना नहीं थी, बल्कि यह एक गंभीर सामाजिक-सांस्कृतिक संकट था, जिसका सबसे अधिक असर महिलाओं पर पड़ा।

यह शोध यह भी रेखांकित करता है कि इतिहास को स्त्री-दृष्टिकोण से पुनः परखने की आवश्यकता है, ताकि वह अधिक समावेशी और संतुलित बन सके। इतिहास लेखन तब ही पूर्ण माना जा सकता है जब उसमें समाज के सभी वर्गों के अनुभवों और योगदानों को स्थान मिले। यह अध्ययन महिला स्वतंत्रता सेनानियों की आवाज़ को मुख्यधारा में

लाकर नारी सशक्तिकरण, सामाजिक समानता और न्यायपूर्ण इतिहास लेखन की दिशा में एक सार्थक योगदान प्रस्तुत करता है।

8. शोध की सीमाएं :

1. **विश्वसनीय स्रोतों की अनुपलब्धता-**
   स्वतंत्रता आंदोलन और विभाजन के दौरान सक्रिय रही कई महिला सेनानियों की जानकारी या तो दस्तावेजों में दर्ज नहीं की गई या बहुत ही सीमित रूप से मौखिक परंपराओं के माध्यम से संरक्षित रही। इसके कारण कई महत्वपूर्ण अनुभवों को इस शोध में पूर्णता के साथ समाहित कर पाना संभव नहीं हो पाया।
2. **स्थानीय इतिहास तक आंशिक पहुँच-**
   भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक महिला क्रांतिकारियों ने उल्लेखनीय योगदान दिया, लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर उनके बारे में पर्याप्त ऐतिहासिक सामग्री और प्रमाण उपलब्ध न होने के कारण, उनके योगदान का विश्लेषण सीमित दायरे में ही रह गया।
3. **मौखिक साक्ष्यों की सीमाएँ-**
   यद्यपि मौखिक इतिहास कई बार सशक्त और सजीव जानकारी का स्रोत होता है, फिर भी स्मृति दोष, व्यक्तिगत पूर्वाग्रह और कथनकर्ताओं की सीमित जानकारी के कारण इसके विश्लेषण में सावधानी बरतनी पड़ी।
4. **भाषा संबंधी बाधाएँ-**
   ऐतिहासिक सामग्री अनेक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है, लेकिन शोधकर्ता की भाषाई दक्षता की सीमाओं के चलते कुछ स्रोतों का अध्ययन प्रत्यक्ष रूप से नहीं किया जा सका, जिससे अध्ययन की व्यापकता पर आंशिक प्रभाव पड़ा।
5. **सीमित संसाधन और समय-**
   इस शोध को सीमित समय और शोध संसाधनों के भीतर पूरा किया गया। फलस्वरूप देश के सभी क्षेत्रों और प्रभावित समुदायों तक पहुँच बनाना संभव नहीं हो सका, जिससे शोध का विस्तार अपेक्षा से कम रहा।
6. **ऐतिहासिक लेखन में वैचारिक पक्षपात-**
   कई ऐतिहासिक स्रोतों में लेखक के दृष्टिकोण और विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा गया, जिसके चलते महिला योगदान को या तो नजरअंदाज किया गया या सीमित रूप में प्रस्तुत किया गया। इन स्रोतों की विवेचना में अतिरिक्त सावधानी की आवश्यकता महसूस हुई।

9. सिफारिशें :

- महिला सेनानियों पर क्षेत्रीय शोध को प्रोत्साहन:
  भारत के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में सक्रिय महिला स्वतंत्रता सेनानियों पर स्थानीय स्तर पर शोध कार्य किया जाना चाहिए, जिससे उनकी अनकही कहानियाँ सामने आ सकें और इतिहास को अधिक समावेशी बनाया जा सके।

- मौखिक इतिहास को संरक्षित करने की पहल:
  जिन महिलाओं या उनके परिजनों के पास विभाजन और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी मौखिक परंपराएं या अनुभव हैं, उन्हें संरक्षित करने हेतु ऑडियो/वीडियो साक्षात्कारों और डिजिटल अभिलेखों की स्थापना की जानी चाहिए।

- बहुभाषी स्रोतों का अनुवाद और प्रकाशन:
  विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध महिला सेनानियों से संबंधित साहित्य, दस्तावेज़, आत्मकथाएँ आदि का हिंदी और अंग्रेज़ी जैसी भाषाओं में अनुवाद कर उन्हें सार्वजनिक किया जाना चाहिए, जिससे शोधकर्ताओं और आम पाठकों तक उनकी पहुँच बन सके।

संदर्भ सूची :

जर्नल पेपर्स:

1. **Chauradia, S. K. (2024).** ***भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका. अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका, 12*****(1).**

कार्यवाही पत्र:

2. Kumar, S. (2023). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला सेनानियों की भूमिका: एक ऐतिहासिक दृष्टि. In A. Verma (Ed.), *राष्ट्रीय महिला अध्ययन संगोष्ठी* (pp. 45–58).

पुस्तक:

3. **Kumar, R. (2011).** ***The history of doing: भारतीय महिलाओं का इतिहास. नई दिल्ली: आशियाना प्रकाशन।***

प्रबंध:

4. Singh, P. (2019). *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिका: एक ऐतिहासिक अध्ययन* (Unpublished master's thesis). *जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।*

वेब संदर्भ:

- https://www.shivajicollege.ac.in/sPanel/uploads/econtent/60e55c256deccf1db389089d24723bd4.pdf?utm_source=chatgpt.com